

प्रारंभिक परीक्षा

नाट्य प्रदर्शन अधिनियम, 1876 का निरसन

संदर्भ

हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अप्रचलित औपनिवेशिक कानूनों को निरस्त करने के महत्व पर प्रकाश डाला, जिसमें नाट्य प्रदर्शन अधिनियम का उल्लेख किया गया, जिसे 2018 में आधिकारिक तौर पर समाप्त कर दिया गया था।

नाट्य प्रदर्शन अधिनियम, 1876 के प्रावधान -

- इस कानून ने ब्रिटिश सरकार को ऐसे सार्वजनिक नाटकीय प्रदर्शनों पर रोक लगाने की शक्ति प्रदान की जो अपमानपूर्ण, अपमानजनक, राजद्रोही और अश्लील थे।
- इसने प्राधिकारियों को किसी भी नाटक, मूकाभिनय या ड्रामा पर प्रतिबंध लगाने की अनुमति दी, जो कि:
 - सरकार के विरुद्ध असंतोष भड़काते हो।
 - दर्शकों को अपमानित और भ्रष्ट करते हो।
- किसी भी मजिस्ट्रेट को निम्नलिखित शक्तियाँ प्राप्त थीं:
 - अधिनियम का उल्लंघन करने वाले संदिग्ध स्थानों के लिए तलाशी और जब्ती वारंट जारी करना।
 - निषिद्ध कार्य करने वाले व्यक्तियों को गिरफ्तार करना।
- सजा: अधिनियम में तीन महीने तक की जेल अवधि, जुर्माना या दोनों का प्रावधान है।
- यह कानून क्यों बनाया गया?
 - अंग्रेजों ने यह कानून प्रिंस ऑफ वेल्स, अल्बर्ट एडवर्ड की भारत यात्रा (1875-76) के बाद लागू किया था।
 - राष्ट्रवादी गतिविधियों को दबाने के उद्देश्य से बनाए गए औपनिवेशिक कानूनों की श्रृंखला का हिस्सा था।
- नाट्य प्रदर्शन अधिनियम, 1876 का निरसन:
 - वर्तमान सरकार ने व्यापार सुगमता सूचकांक में सुधार के लिए अप्रचलित कानूनों को निरस्त करने हेतु एक प्रमुख पहल शुरू की है।
 - 2014 से अब तक 2,000 से अधिक अप्रचलित कानून हटा दिये गये हैं।
 - यद्यपि पहले ही न्यायालयों द्वारा इसे अवैध घोषित कर दिया गया था, लेकिन संसद द्वारा निरसन एवं संशोधन (द्वितीय) अधिनियम, 2017 के तहत इसे औपचारिक रूप से निरस्त कर दिया गया।

भारत में औपनिवेशिक कानून आज भी क्यों मौजूद हैं?

- संविधान के अनुच्छेद 372 में कहा गया है कि स्वतंत्रता के समय लागू कानून तब तक जारी रहेंगे जब तक उन्हें निरस्त या संशोधित नहीं किया जाता।
- हालाँकि, औपनिवेशिक युग के कानूनों को संवैधानिकता का दर्जा नहीं दिया गया है:
 - चुनौती दिए जाने पर सरकार को उनकी वैधता का औचित्य सिद्ध करना होगा।
 - इसके विपरीत, स्वतंत्र भारत द्वारा बनाए गए कानूनों को तब तक संवैधानिक माना जाता है जब तक कि अन्यथा साबित न हो जाए।

स्रोत: [Indian Express - Repeal of the Dramatic Performances Act, 1876](#)

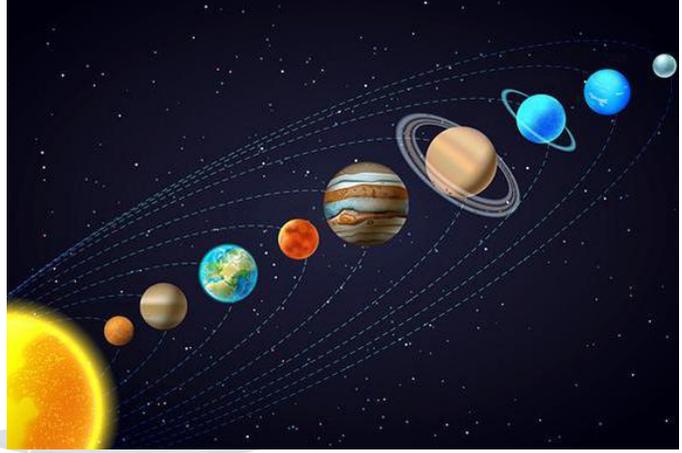
ग्रहों की परेड (Planetary Parade)

संदर्भ

हाल ही में 28 फरवरी को सात ग्रह एक दुर्लभ "ग्रहों की परेड" के लिए पंक्तिबद्ध हुए।

ग्रहों की परेड के बारे में -

- यह एक खगोलीय घटना है जिसमें कई ग्रह रात्रि आकाश में सूर्य से दूरी के क्रम में पंक्तिबद्ध दिखाई देते हैं।
- ग्रहों की परेड क्यों होती है?
 - ग्रह सूर्य के चारों ओर अण्डाकार कक्षाओं में घूमते हैं लेकिन लगभग एक ही तल (एक्लिप्टिक प्लेन) में रहते हैं।
 - ग्रह वास्तव में अंतरिक्ष में संरेखित नहीं होते हैं, लेकिन अपनी कक्षाओं में अपनी स्थिति के कारण पृथ्वी से ऐसे दिखाई देते हैं।
 - जैसे-जैसे वे घूमते हैं, कभी-कभी पृथ्वी से देखने पर कई ग्रह आकाश के एक ही क्षेत्र में दिखाई देते हैं।
- ग्रहों की परेड की आवृत्ति:
 - तीन या चार ग्रहों की परेड: ये हर कुछ वर्षों में एक बार होती हैं और अपेक्षाकृत सामान्य हैं।
 - सात या आठ ग्रहों की परेड: बहुत दुर्लभ, कई दशकों में केवल एक बार होने वाली।
- 28 फरवरी, 2024 की घटना:
 - सम्मिलित ग्रह: बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस और नेपच्यून (कुल 7 ग्रह)।
 - अगली समान घटना: अगली प्रमुख ग्रहों की परेड 2040 में होने की उम्मीद है, जिसमें छह ग्रह शामिल होंगे।



संबंधित शब्दावली

- **संयोजन (कन्जक्शन):** जब दो या दो से अधिक खगोलीय पिंड आकाश में एक दूसरे के बहुत निकट दिखाई देते हैं।
- **महान संयोजन:** एक दुर्लभ घटना जब बृहस्पति और शनि एक साथ बेहद करीब दिखाई देते हैं (अंतिम बार दिसंबर 2020 में हुआ था)।

स्रोत: [The Hindu - Planetary Parade](#)

उच्च सेलेनियम स्तर के कारण बाल झड़ते हैं

संदर्भ

दिसंबर 2024 और जनवरी 2025 के बीच, महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले के शेगाँव तालुका के 18 गाँवों में अचानक बाल झड़ने के 300 से अधिक मामले सामने आए।

जांच और मुख्य निष्कर्ष -

- ICMR(भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद) और एम्स दिल्ली की एक टीम ने रक्त, बाल, गेहूं, पानी और मिट्टी के नमूनों का परीक्षण किया।
- निष्कर्ष:
 - प्रभावित व्यक्तियों के रक्त में सेलेनियम सामान्य से 31 गुना अधिक था।
 - पीडीएस दुकानों से गेहूं के नमूनों में सेलेनियम का स्तर सुरक्षित सीमा से 2-8 गुना अधिक था।
 - पानी के नमूने सामान्य थे, पानी को इसका कारण नहीं माना गया।
 - जिन लोगों ने पीडीएस का गेहूं नहीं खाया, वे प्रभावित नहीं हुए, जिससे गेहूं को स्रोत साबित किया गया।

सेलेनियम के बारे में -

- सेलेनियम एक सूक्ष्म खनिज है जो अच्छे स्वास्थ्य के लिए थोड़ी मात्रा में आवश्यक होता है।
- यह गेहूं, अंडे, मछली, मांस और नट्स जैसे खाद्य पदार्थों में पाया जाता है।
- यह थायरॉइड फ़ंक्शन, प्रतिरक्षा प्रणाली और एंटीऑक्सीडेंट रक्षा में मदद करता है।
- बहुत अधिक सेलेनियम के प्रभाव: अधिक सेलेनियम का सेवन करने से सेलेनोसिस होता है, जिसके परिणामस्वरूप निम्नलिखित समस्याएं होती हैं:
 - बालों का झड़ना
 - भंगुर नाखून
 - त्वचा पर चकत्ते
 - पाचन संबंधी समस्याएं
 - गंभीर मामलों में, तंत्रिका क्षति या गुर्दे की समस्याएं

स्रोत: [The Hindu - Selenium in Wheat](#)

अधिवक्ता (संशोधन) विधेयक, 2025

संदर्भ

कानूनी निकायों के विरोध के बाद हाल ही में अधिवक्ता (संशोधन) विधेयक, 2025 को वापस ले लिया गया।

अधिवक्ता (संशोधन) विधेयक, 2025 के उद्देश्य -

- विधि मंत्रालय ने कानूनी पेशे में "समकालीन चुनौतियों" के समाधान के लिए अधिवक्ता अधिनियम, 1961 में संशोधन करने की मांग की।
- इसका उद्देश्य भारतीय कानूनी प्रथाओं को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाना तथा विधि क्षेत्र में परिवर्तनों को समायोजित करना था।

अधिवक्ता अधिनियम, 1961 के बारे में -

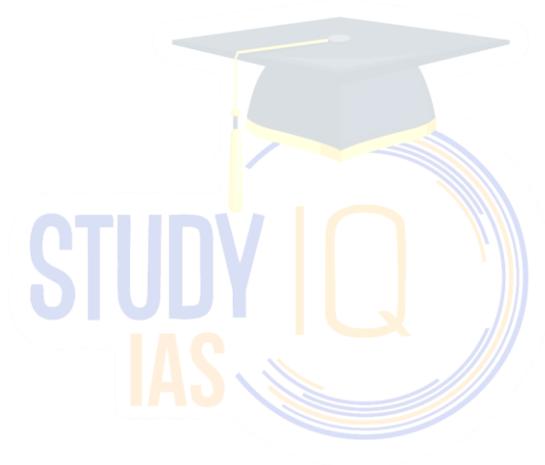
- भारत में कानूनी पेशे को नियंत्रित करने वाला प्राथमिक कानून है।
- इसमें अधिवक्ताओं के विनियमन, बार काउंसिल ऑफ इंडिया(BCI) और राज्य बार काउंसिलों के गठन तथा अधिवक्ताओं के आचरण के संबंध में प्रावधान किया गया है।
- अधिनियम की धारा-4 ने बार काउंसिल ऑफ इंडिया (BCI) की स्थापना की, जो कानूनी पेशे और कानूनी शिक्षा को नियंत्रित करती है।

विधेयक से जुड़े प्रमुख विवाद -

- वकीलों की हड़ताल और बहिष्कार पर प्रतिबंध:
 - विधेयक में धारा 35-A पेश की गई, जो वकीलों के हड़ताल पर जाने या अदालतों का बहिष्कार करने पर रोक लगाती है।
 - इसने ऐसे कार्यों को "कदाचार" के रूप में परिभाषित किया, जिससे वकीलों को 1961 अधिनियम और BCI नियम, 1975 के तहत अनुशासनात्मक कार्रवाई के अधीन होना पड़ा।
 - चिंता: कई बार एसोसिएशनों ने इसका विरोध किया और तर्क दिया कि हड़ताल वकीलों के लिए अपनी शिकायतें व्यक्त करने का एक वैध साधन है।
- कार्यकारी नियंत्रण पर चिंताएं:
 - विधेयक में बार काउंसिल ऑफ इंडिया(BCI) में सरकार की भूमिका का विस्तार करने का प्रस्ताव किया गया है, जिसके तहत केंद्र को अधिकतम तीन सदस्यों को नामित करने की अनुमति दी गई है।
 - अटॉर्नी जनरल, सॉलिसिटर जनरल और राज्य बार काउंसिल के प्रतिनिधियों जैसे मौजूदा सदस्यों के साथ शामिल होंगे।
 - BCI ने इसका कड़ा विरोध किया और इसे "कठोर" तथा अपनी स्वतंत्रता को कम करने का प्रयास बताया।
 - BCI की स्वायत्तता को प्रभावित करने वाले प्रमुख प्रावधान:
 - धारा 49B: केंद्र को BCI को बाध्यकारी निर्देश जारी करने की अनुमति दी गई।
 - धारा 45B: BCI को देश भर में वकीलों के खिलाफ शिकायतों की सुनवाई करने और अपने विवेक पर वकीलों को निलंबित करने का अधिकार दिया गया।
 - धारा 48B: BCI को राज्य बार काउंसिलों को भंग करने और अप्रभावी पाए जाने पर उनके स्थान पर समिति गठित करने का अधिकार दिया गया।
- कॉर्पोरेट वकीलों और विदेशी कानून फर्मों पर प्रभाव:
 - विधेयक में "कानूनी व्यवसायी" की परिभाषा का विस्तार करते हुए इसमें कॉर्पोरेट वकील, इन-हाउस वकील और विदेशी फर्मों के वकीलों को भी शामिल किया गया है।
 - इसका उद्देश्य कॉर्पोरेट वकीलों को औपचारिक रूप से मान्यता देना तथा भारत में विदेशी कानूनी फर्मों के प्रवेश को विनियमित करना था।

- BCI ने इसका विरोध करते हुए तर्क दिया कि इससे अधिवक्ताओं और कानूनी पेशेवरों के बीच का अंतर धुंधला हो सकता है।

स्रोत: [The Hindu - Advocates Amendment Bill](#)



अल्टिएरी रिंग (Altieri's Ring)

संदर्भ

यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के यूक्लिड अंतरिक्ष मिशन ने हाल ही में एक आइंस्टीन रिंग देखी और इसे अल्टिएरी रिंग नाम दिया गया।

अल्टिएरी रिंग के बारे में?

- सितंबर 2023 में, यूक्लिड अंतरिक्ष टेलीस्कोप ने पास की आकाशगंगा NGC 6505 में एक आइंस्टीन रिंग खोजी, जो 590 मिलियन प्रकाश वर्ष दूर है।
- इसकी खोज खगोलशास्त्री ब्रूनो अल्टिएरी ने एक प्रारंभिक परीक्षण चित्र में की थी, तथा बाद में स्पष्ट चित्रों से इसके अस्तित्व की पुष्टि हुई।
- उनके सम्मान में इस रिंग का नाम अल्टिएरी रिंग रखा गया।
- यह रिंग या वलय वास्तव में 4.5 अरब प्रकाश वर्ष दूर स्थित एक अन्य आकाशगंगा का विकृत प्रतिबिम्ब है।
- इस खोज का महत्व:
 - अल्टिएरी रिंग विशेष है क्योंकि यह NGC 6505 में पाई गई थी, जो एक अच्छी तरह से अध्ययन की गई निकटवर्ती आकाशगंगा है, जिसके बारे में खगोलशास्त्रियों को 19वीं शताब्दी से ही जानकारी थी।
 - पृथ्वी से समान दूरी पर केवल पांच अन्य गुरुत्वाकर्षण लेंस पाए गए हैं।



आइंस्टीन रिंग क्या है?

- आइंस्टीन रिंग प्रकाश की एक दुर्लभ रिंग या वलय है जो गुरुत्वाकर्षण लेंसिंग के कारण बनती है।
- गुरुत्वाकर्षण लेंसिंग तब होती है जब एक विशाल आकाशीय वस्तु (एक आकाशगंगा या आकाशगंगाओं का समूह) एक गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र बनाती है जो अपने पीछे एक दूर की वस्तु से प्रकाश को मोड़ती और बढ़ाती है।
- इसकी भविष्यवाणी अल्बर्ट आइंस्टीन के जनरल थ्योरी ऑफ़ रिलेटिविटी (1915) द्वारा की गई थी, जिसमें कहा गया था कि गुरुत्वाकर्षण विशाल वस्तुओं के चारों ओर प्रकाश को मोड़ सकता है।
- आइंस्टीन रिंग केवल तभी बनती है जब पृष्ठभूमि आकाशगंगा, लेंसिंग आकाशगंगा और पृथ्वी पूरी तरह से संरेखित हों।
- प्रथम आइंस्टीन रिंग की खोज 1987 में हुई थी, तथा उसके बाद से और भी रिंग पाई गई हैं, किन्तु वे अत्यंत दुर्लभ हैं।
 - 1% से भी कम आकाशगंगाओं में आइंस्टीन रिंग मौजूद है।
- आइंस्टीन रिंग नग्न आंखों से दिखाई नहीं देती और इन्हें केवल ईएसए के यूक्लिड जैसे उन्नत अंतरिक्ष टेलीस्कोप के माध्यम से ही देखा जा सकता है।

यूक्लिड अंतरिक्ष मिशन -

- इसे जुलाई, 2023 में यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ईएसए) द्वारा लॉन्च किया गया था।
- उद्देश्य: डार्क मैटर और डार्क एनर्जी की जांच करना, जो मिलकर ब्रह्मांड का 95% हिस्सा बनाते हैं।
- यह 1.2 मीटर टेलीस्कोप से सुसज्जित है, यह दूर स्थित आकाशगंगाओं की उच्च-रिज़ॉल्यूशन वाली छवियां और स्पेक्ट्रा कैप्चर करता है।
- यह पृथ्वी से लगभग 1.5 मिलियन किमी दूर सूर्य-पृथ्वी L2 कक्षा से संचालित होता है।
- इससे अरबों आकाशगंगाओं का मानचित्रण करने तथा 10 अरब वर्षों का 3D ब्रह्मांडीय मानचित्र तैयार करने की उम्मीद है।
- मिशन अवधि - 6 वर्ष।

वैज्ञानिक आइंस्टीन रिंग्स का अध्ययन क्यों करते हैं?

- **डार्क मैटर को समझना:** डार्क मैटर ब्रह्मांड के कुल पदार्थ का 85% हिस्सा बनाता है, लेकिन इसे कभी भी प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा गया है।
 - गुरुत्वाकर्षण लेंसिंग आकाशगंगाओं के चारों ओर प्रकाश के मुड़ने के तरीके का अवलोकन करके अप्रत्यक्ष रूप से डार्क मैटर का पता लगाने में मदद करता है।
- **दूर की आकाशगंगाओं का अध्ययन:** कुछ आकाशगंगाएँ इतनी धुंधली होती हैं कि उन्हें सीधे नहीं देखा जा सकता। गुरुत्वाकर्षण लेंसिंग उनके प्रकाश को बढ़ा देता है, जिससे वैज्ञानिकों को उन आकाशगंगाओं का अध्ययन करने में मदद मिलती है जो अन्यथा छिपी रहतीं।
- **ब्रह्मांड के विस्तार को मापना:** ब्रह्मांड फैल रहा है, जिससे पृथ्वी और अन्य आकाशगंगाओं के बीच का स्थान बढ़ रहा है।
 - आइंस्टीन रिंग यह डेटा प्रदान करते हैं कि आकाशगंगाएं कितनी तेजी से अलग हो रही हैं, जिससे ब्रह्मांडीय विस्तार के माप को परिष्कृत करने में मदद मिलती है।

स्रोत: [The Hindu - Einstein Ring](#)

ब्लू घोस्ट मिशन 1

संदर्भ

हाल ही में फायरफ्लाई एयरोस्पेस का ब्लू घोस्ट मिशन-1 सफलतापूर्वक चंद्रमा पर उतरा।

सफल निजी चंद्र लैंडिंग -

- नासा की वाणिज्यिक चंद्र पेलोड सेवा (CLPS) पहल के तहत फायरफ्लाई एयरोस्पेस का ब्लू घोस्ट लैंडर सफलतापूर्वक चंद्रमा पर उतरा।
 - CLPS कार्यक्रम का उद्देश्य चंद्र अन्वेषण में निजी क्षेत्र की प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना और लागत कम करना है।
- लैंडिंग स्थल: मैरे क्रिसियम, चंद्रमा के उत्तर-पूर्वी निकटवर्ती भाग में।
- अंतरिक्ष यान खतरों से बचने के लिए इलाके में नेविगेट करते हुए, चंद्र कक्षा से स्वायत्त रूप से उतरा।
- अपेक्षित मिशन अवधि: दो सप्ताह (एक पूर्ण चंद्र दिवस)।
- सीधा उतरने वाला पहला निजी लैंडर:
 - ब्लू घोस्ट ऐसा पहला निजी लैंडर है जो बिना दुर्घटनाग्रस्त हुए या बिना गिरे चंद्रमा पर उतरा।
 - यहां तक कि राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसियां भी चंद्रमा पर उतरने में संघर्ष करती हैं - केवल पांच देश (रूस, अमेरिका, चीन, भारत और जापान) ही सफलतापूर्वक चंद्रमा पर उतर पाए हैं।



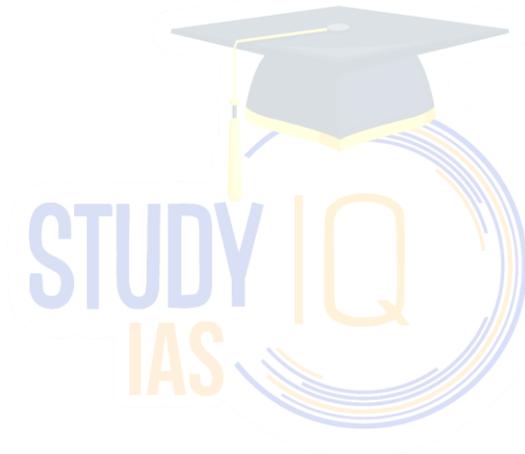
ब्लू घोस्ट पर वैज्ञानिक उद्देश्य और उपकरण -

- चंद्र मृदा संग्रहण: चंद्र मृदा के नमूने एकत्र करने के लिए एक निर्वात प्रणाली।
- भूमिगत तापमान माप: एक ड्रिल जो सतह से 10 फीट (3 मीटर) नीचे तक तापमान मापने में सक्षम है।
- चंद्र धूल शमन: चंद्र धूल को खत्म करने के लिए डिज़ाइन किया गया एक उपकरण, जो अपोलो अंतरिक्ष यात्रियों के सामने आने वाली एक महत्वपूर्ण चुनौती का समाधान करता है, जिनके उपकरण और सूट घर्षणकारी चंद्र धूल से ढके हुए थे।
- नेविगेशन उन्नति:
 - एक ऑनबोर्ड रिसेवर ने अमेरिकी जीपीएस और यूरोपीय गैलिलियो उपग्रह कांस्टेलेशन से सफलतापूर्वक संकेत प्राप्त किये।
 - इससे भविष्य में चंद्र अन्वेषकों के लिए नेविगेशन में सुधार हो सकता है।
- उच्च-रिज़ॉल्यूशन चंद्र इमेजिंग:
 - चंद्रमा की ओर जाते समय पृथ्वी के विस्तृत चित्र खींचे।
 - लैंडिंग के बाद चंद्रमा की क्रेटरयुक्त सतह की उच्च-रिज़ॉल्यूशन वाली तस्वीरें भी भेजीं।

आगामी निजी चंद्र मिशन -

- **इन्ट्यूटिव मशीन्स (यू.एस.):**
 - ह्यूस्टन स्थित इन्ट्यूटिव मशीन्स अपने दूसरे चंद्र लैंडिंग प्रयास की तैयारी कर रही है।
 - कंपनी का पहला चंद्र मिशन असफल रहा, लेकिन यह अपोलो (1972) के बाद पहली अमेरिकी चंद्र लैंडिंग थी।
- **आईस्पेस (जापान):**
 - जापानी कंपनी आईस्पेस अपनी दूसरी चंद्रमा लैंडिंग की कोशिश से तीन महीने दूर है।
 - इसका पहला लैंडर 2023 में दुर्घटनाग्रस्त हो गया।

स्रोत: [Indian Express - Private lander Blue Ghost](#)



उच्च शिक्षा संस्थानों में भेदभाव पर UGC के मसौदा नियम

संदर्भ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने भेदभाव को फिर से परिभाषित करने और विश्वविद्यालय परिसरों में "जाति-आधारित भेदभाव" शब्द को स्पष्ट रूप से पेश करने के उद्देश्य से मसौदा नियम जारी किए हैं।

मसौदा विनियमों के बारे में -

- **UGC (उच्च शिक्षा संस्थानों में समानता को बढ़ावा देना) विनियम, 2025 में शामिल हैं:**
 - भेदभाव की नई परिभाषाएँ
 - शिकायतों को निपटाने के लिए एक "इक्विटी समिति" का प्रस्ताव
 - झूठी शिकायतों के लिए दंड
- **"भेदभाव" की संशोधित परिभाषा:**
 - धर्म, नस्ल, जाति, लिंग, जन्म स्थान या इनमें से किसी भी संयोजन के आधार पर किसी भी हितधारक के खिलाफ "किसी भी अनुचित, विभेदक या पक्षपातपूर्ण उपचार" के रूप में परिभाषित किया गया है।
 - नियम सभी हितधारकों पर लागू होंगे, न कि केवल छात्रों पर। इसमें संकाय, कर्मचारी और प्रशासक शामिल हो सकते हैं।
 - **मुद्दा:** नई परिभाषा के अंतर्गत केवल एससी और एसटी को ही शामिल किया गया है, ओबीसी और अन्य हाशिए के समूहों को इससे बाहर रखा गया है। इस संकीर्ण परिभाषा ने चिंताएं बढ़ा दी हैं।
- **"इक्विटी समिति" की स्थापना:**
 - नये नियमों में विश्वविद्यालयों में समान अवसर केन्द्रों के अंतर्गत एक समानता समिति के गठन का प्रस्ताव है।
- **संस्थानों की मान्यता रद्द करने की UGC की नई शक्ति:**
 - यदि संस्थान इन विनियमों का पालन करने में विफल रहते हैं, तो UGC उनकी मान्यता रद्द कर सकता है।
- **झूठी शिकायतों के लिए सजा:**
 - झूठी शिकायत करने वाले व्यक्तियों पर अनुशासनात्मक कार्रवाई और जुर्माना लगाया जा सकता है।
 - **मुद्दा:** मसौदे में स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया गया है कि "झूठी शिकायत" क्या है, जिससे वास्तविक शिकायतों को दबाने के लिए इस प्रावधान के दुरुपयोग की चिंता पैदा होती है।

स्रोत: [The Hindu - UGC new draft rules](#)

समाचार संक्षेप में

चाय की भारी धातुओं को हटाने की क्षमता

- एक नए अध्ययन के अनुसार ठीक से बनाई गई चाय(**brewed tea**) पानी से सीसा और कैडमियम जैसी भारी धातुओं को फिल्टर करने में मदद कर सकती है।

चाय भारी धातुओं को कैसे सोखती है -

- इस प्रक्रिया को **अवशोषण** कहा जाता है, जिसमें आयन या अणु किसी अन्य अणु की सतह पर चिपक जाते हैं और उस पर एक फिल्म बना देते हैं।
- भारी धातु के आयन चाय की पत्तियों की सतह से चिपक जाते हैं और वहीं फंसे रहते हैं, जिससे उन्हें तैयार चाय में प्रवेश करने से रोका जाता है।
- **अध्ययन से मुख्य निष्कर्ष:**
 - एक मानक कप चाय 15% तक सीसा हटा सकती है।
 - लंबे समय तक भिगोने का समय (उदाहरण के लिए, रात भर आइस्ड टी) अधिक धातुएं निकालता है।
 - सेल्युलोज टी बैग नायलॉन या कॉटन बैग की तुलना में अधिक प्रभावी होते हैं।
 - बारीक पिंसी हुई काली चाय अपने बड़े हुए सतह क्षेत्रफल के कारण अधिक धातुओं को सोख लेती है।

स्रोत: [Indian Express - Tea leaves](#)

जैव विविधता रिसाव(Biodiversity Leakage)

- **जैव विविधता का रिसाव तब होता है जब एक स्थान पर प्रकृति की रक्षा के प्रयास अनजाने में दूसरे स्थान पर पर्यावरणीय क्षति का कारण बनते हैं।**
- ऐसा तब होता है जब संरक्षण के प्रयास एक देश में खेती, कटाई, या अन्य उत्पादन गतिविधियों को कम कर देते हैं, जिससे वे गतिविधियाँ अक्सर अधिक जैव विविधता वाले दूसरे देश में स्थानांतरित हो जाती हैं।
- **उदाहरण:**
 - यूनाइटेड किंगडम ने जंगलों को बहाल करने और वन्यजीवों की रक्षा के लिए 1,000 वर्ग किलोमीटर भूमि पर गेहूँ की खेती बंद करने का फैसला किया है।
 - हालांकि यह स्थानीय जैव विविधता के लिए अच्छा है, ब्रिटेन को अभी भी गेहूँ की जरूरत है। इसलिए, वह दूसरे देश से अधिक गेहूँ आयात करना शुरू कर देता है।
 - यदि वह गेहूँ अब ब्राजील या इंडोनेशिया जैसे अत्यधिक जैव विविधता वाले देश से आता है, तो वहाँ के किसान अधिक गेहूँ उगाने के लिए जंगलों को साफ कर सकते हैं या प्राकृतिक आवासों को नष्ट कर सकते हैं।
 - इसका मतलब यह है कि जहाँ ब्रिटेन जैव विविधता हासिल करता है, वहीं दूसरा देश इसे खो देता है, जिससे कोई वास्तविक वैश्विक लाभ या यहां तक कि शुद्ध नुकसान नहीं होता है।

स्रोत: [Down to Earth - Biodiversity Leak](#)

अभ्यास डेजर्ट हंट - 2025

- यह जोधपुर वायु सेना स्टेशन पर भारतीय वायु सेना द्वारा आयोजित एक एकीकृत त्रि-सेवा विशेष बल अभ्यास है।
- इस अभ्यास में भारतीय सेना के विशिष्ट पैरा (विशेष बल), भारतीय नौसेना के समुद्री कमांडो के साथ-साथ भारतीय वायु सेना के गरुड़ (विशेष बल) शामिल थे।

स्रोत: [PIB - Desert Hunt](#)

सशक्त पंचायत-नेत्री अभियान

- यह पंचायती राज संस्थाओं(PRI) में महिला निर्वाचित प्रतिनिधियों (WER) को सशक्त बनाने के लिए एक राष्ट्रव्यापी क्षमता निर्माण पहल है:
 - नेतृत्व और निर्णय लेने की क्षमता को मजबूत करना।
 - जमीनी स्तर पर शासन में उनकी भागीदारी बढ़ाना।
 - ग्रामीण स्तर पर नीति और शासन में उनकी सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करना
- इसे पंचायती राज मंत्रालय द्वारा लॉन्च किया गया है।
- पहल का महत्व:
 - PRI के तीनों स्तरों (ग्राम पंचायत, ब्लॉक पंचायत और जिला पंचायत) से महिला प्रतिनिधियों की पहली राष्ट्रीय सभा।

स्रोत: [PIB - Sashakt Panchayat-Netri Abhiyan](#)



संपादकीय सारांश

छात्र और तीन भाषाओं पर बहस

संदर्भ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) और इसके तीन भाषाओं के फॉर्मूले (त्रि-भाषा फॉर्मूले) ने एक लंबे समय से चली आ रही बहस को फिर से जन्म दे दिया है, खासकर केंद्र और तमिलनाडु के बीच।

पृष्ठभूमि -

- कोठारी आयोग (राष्ट्रीय शिक्षा आयोग, 1964-66) ने सर्वप्रथम त्रिभाषा फार्मूला प्रस्तावित किया था।
- 1968 में, त्रि-भाषा फॉर्मूला को औपचारिक रूप से अपनाया गया था।
- NEP-2020 त्रि-भाषा फॉर्मूले का समर्थन करना जारी रखती है लेकिन इसमें लचीलापन लाया गया है:
 - राज्य यह निर्णय ले सकते हैं कि कौन सी तीन भाषाएं पढ़ाई जाएं।
 - कोई भी भाषा थोपी नहीं जाएगी, लेकिन छात्रों को कम से कम दो भारतीय भाषाएं सीखनी होंगी।
- संरचना:
 - हिन्दी भाषी राज्य: हिन्दी + अंग्रेजी + एक आधुनिक भारतीय भाषा (अधिमानत: एक दक्षिण भारतीय भाषा)।
 - गैर हिन्दी भाषी राज्य: क्षेत्रीय भाषा + हिन्दी + अंग्रेजी।

परिकल्पना और जमीनी हकीकत -

- NEP तीन भाषाओं के अनिवार्य अध्ययन को तीन आधारों पर उचित ठहराती है:
 - संज्ञानात्मक क्षमता में सुधार
 - रोजगार गतिशीलता में वृद्धि
 - राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा देना

हालाँकि, इन दावों में खामियाँ हैं:

- भाषा अर्जन में प्रौद्योगिकी की भूमिका: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) में प्रगति के साथ, ज्ञान अर्जन के लिए भाषा दक्षता कम महत्वपूर्ण होती जा रही है।
 - गूगल जेमिनी जैसे एआई उपकरण सामग्री को तुरंत कई भाषाओं में अनुवाद कर सकते हैं, जिससे पारंपरिक भाषा सीखने की आवश्यकता कम हो जाती है।
- संज्ञानात्मक लाभ के साक्ष्य का अभाव: जबकि द्विभाषिकता संज्ञानात्मक क्षमताओं में सुधार करती है, इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है कि तीन भाषाओं को जानने से संज्ञानात्मक कौशल आनुपातिक रूप से बढ़ता है।
 - इसके बजाय, शोध से पता चलता है कि अतिरिक्त भाषाओं को शुरू करने से पहले मातृभाषा में मजबूत आधार बच्चे के लिए अधिक फायदेमंद होता है।
- वास्तविक दुनिया में अतिरिक्त भाषाओं को सीखना: व्यावहारिक परिस्थितियों में, वयस्क पेशेवर आवश्यकताओं के आधार पर नई भाषाएं सीखते हैं।
 - उदाहरण के लिए, भारतीय सेना में तमिल सैनिक जल्दी से हिन्दी सीख लेते हैं। महाराष्ट्र में तमिल सेल्समैन ग्राहकों से संवाद करने के लिए मराठी सीखते हैं।

तीन भाषा फार्मूला लागू करने से जुड़े मुद्दे -

- सरकारी स्कूल के छात्रों पर बोझ: सरकारी स्कूल के छात्रों, जिनके पास पूरक शिक्षा (जैसे कोचिंग और ट्यूशन) तक पहुंच नहीं है, को अतिरिक्त भाषा सीखने में कठिनाई होगी, जिससे उनके और निजी स्कूल के छात्रों के बीच की खाई और चौड़ी हो जाएगी।

- **संदिग्ध संज्ञानात्मक लाभ:** यद्यपि द्विभाषिकता संज्ञानात्मक विकास से जुड़ी हुई है, लेकिन इस बात का कोई ठोस सबूत नहीं है कि तीन भाषाएं सीखने से संज्ञानात्मक क्षमता में आनुपातिक रूप से वृद्धि होती है।
- **प्राथमिक शिक्षा में कमजोर आधार:** **ASER 2024** के अनुसार, तमिलनाडु में कक्षा 3 के 88% छात्रों में बुनियादी साक्षरता कौशल की कमी है। तीसरी भाषा से बुनियादी शिक्षा में सुधार से ध्यान भटकेगा।
- **शिक्षकों की उपलब्धता और बुनियादी ढांचे की चुनौतियां:** पब्लिक स्कूल पहले से ही मौजूदा विषयों के लिए पर्याप्त सक्षम शिक्षकों को खोजने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।
 - तीसरी भाषा जोड़ने से यह समस्या और भी बदतर हो जाएगी, खासकर यदि अलग-अलग माता-पिता अलग-अलग तीसरी भाषाएं चुनते हैं।
 - **तमिलनाडु में प्रति बालक शिक्षा बजट भारत में सर्वाधिक है, इसके बावजूद:**
 - शिक्षा बजट का 80-90% हिस्सा शिक्षकों के वेतन पर खर्च होता है।
 - बुनियादी ढांचे के लिए अभी भी पर्याप्त धन नहीं उपलब्ध है।
 - तृतीय भाषा के शिक्षकों के लिए धन आबंटित करने से स्कूल के बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए निवेश कम हो सकता है।
- **सांस्कृतिक आधार के रूप में भाषा:** जबकि भाषा राष्ट्रीय एकता में भूमिका निभाती है, तीसरी भाषा सांस्कृतिक एकीकरण को बढ़ावा देने का न तो एकमात्र तरीका है और न ही सबसे अच्छा तरीका है। संस्कृतियों के बीच साझा इतिहास और आपसी सम्मान एकता को बढ़ावा देने में अधिक प्रभावी हैं।
- **अंग्रेजी दक्षता को खतरा:** हिंदी पर ध्यान केंद्रित करने से अंग्रेजी दक्षता को मजबूत करने के प्रयास कमजोर पड़ सकते हैं, जो राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए आवश्यक है।

आगे की राह -

- **मिडिल स्कूल से वैकल्पिक तीसरी भाषा:** अनिवार्य त्रि-भाषा सीखने के स्थान पर, हिंदी को मिडिल स्कूल में वैकल्पिक विषय के रूप में शुरू किया जा सकता है (पहले जिला मुख्यालय में, फिर मांग के आधार पर इसका विस्तार किया जा सकता है)।
 - यह क्रमिक दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि छात्रों पर अधिक बोझ न पड़े और यदि उन्हें कैरियर में लाभ दिखाई दे तो वे हिंदी सीख सकते हैं।
- **शिक्षण और सीखने पर ध्यान देना:** स्कूलों में उपलब्ध समय सीमित है, और एआई-संचालित शिक्षण उपकरणों के साथ, शिक्षा को रटने वाली भाषा सीखने के बजाय आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और समस्या-समाधान को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- **अंग्रेजी शिक्षा को सुदृढ़ बनाना:** तमिलनाडु को अंग्रेजी दक्षता में सुधार पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए:
 - केंद्रीय परीक्षाओं में प्रतिस्पर्धात्मकता सुनिश्चित करना।
 - बहुराष्ट्रीय कंपनियों में नौकरी के अवसर बढ़ाना।
 - सेवा-आधारित उद्योगों में वैश्विक कैरियर की संभावनाओं को बढ़ाना।
- **शिक्षक प्रशिक्षण और बुनियादी ढांचे को प्राथमिकता देना:** तीसरी भाषा के शिक्षकों को नियुक्त करने के बजाय, संसाधनों को निम्नलिखित पर केंद्रित किया जाना चाहिए:
 - साक्षरता दर में सुधार के लिए मौजूदा शिक्षकों को प्रशिक्षण देना।
 - बेहतर शिक्षण वातावरण बनाने के लिए स्कूल के बुनियादी ढांचे को बढ़ाना।
- **राष्ट्रीय भाषा नीति के रुझानों की निगरानी:** यदि राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी अंग्रेजी का स्थान लेने लगे, तो तमिलनाडु को छात्रों को वंचित होने से बचाने के लिए अपनी नीतियों को तदनुसार बदलना होगा।

स्रोत: [The Hindu: The student and the three language debate](#)

भारत मोटापे की चुनौती का सामना क्यों कर रहा है?

संदर्भ

हाल ही में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने 'मन की बात' रेडियो कार्यक्रम में भारत में मोटापे में चिंताजनक वृद्धि पर प्रकाश डाला।

समाचार के बारे में और अधिक जानकारी -

- उन्होंने बताया कि **8 में से 1 भारतीय** मोटापे से प्रभावित है।
- लोगों से स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने के लिए प्रति माह तेल की खपत में 10% की कमी करने का आग्रह किया गया।

समस्या का पैमाना -

- **मोटापे की परिभाषा:** विश्व स्वास्थ्य संगठन(WHO) अधिक वजन और मोटापे को असामान्य या अत्यधिक वसा संचय के रूप में परिभाषित करता है जो स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा करता है।

भारत में मोटापे का रुझान (NFHS डेटा) -

- **राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण(NFHS) के आंकड़े मोटापे में लगातार वृद्धि दर्शाते हैं :**
 - **महिलाएं (अधिक वजन/मोटापे से ग्रस्त):**
 - 2015-16 (NFHS-4): 20.6%
 - 2019-21 (NFHS-5): 24%
 - **पुरुष (अधिक वजन/मोटापे से ग्रस्त):**
 - 2015-16 (NFHS-4): 18.9%
 - 2019-21 (NFHS-5): 22.9%
 - शहरी क्षेत्रों में मोटापे का स्तर ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में काफी अधिक है।
- **पेट का मोटापा (लैसेट अध्ययन, 2023):** लैसेट रीजनल हेल्थ साउथईस्ट एशिया में 2023 के एक अध्ययन में **NFHS-5 डेटा का** विश्लेषण किया गया और पाया गया:
 - **40% महिलाएं** पेट संबंधी मोटापे से ग्रस्त थीं।
 - **12% पुरुषों में** पेट संबंधी मोटापा पाया गया।
- **बचपन में मोटापा:** NFHS डेटा से पता चलता है कि **5 वर्ष से कम उम्र के अधिक वजन वाले बच्चों में वृद्धि हुई है :**
 - 2015-16: 2.1%
 - 2019-21: 3.4%
 - बड़े बच्चों को और भी अधिक जोखिम का सामना करना पड़ता है (विश्व मोटापा एटलस 2022 का 2030 के लिए अनुमान):
 - **5 से 9 वर्ष के बच्चे: 10.81% प्रचलन**
 - **10 से 19 वर्ष के बच्चे: 6.23% प्रचलन**

मोटापे से जुड़े स्वास्थ्य जोखिम -

- **मेटाबोलिक सिंड्रोम:** भारतीयों में पेट में वसा जमा होने की आनुवंशिक प्रवृत्ति होती है।
 - पेट का मोटापा मेटाबोलिक सिंड्रोम में योगदान देता है, जिससे निम्नलिखित जोखिम बढ़ जाते हैं:
 - टाइप 2 मधुमेह
 - दिल की बीमारी
 - आघात(Stroke)
- **वयस्क स्वास्थ्य जोखिम:** विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, मोटापा खराब स्वास्थ्य और समय से पहले मृत्यु के प्रमुख कारणों में से एक प्रमुख जोखिम कारक है, जिसमें शामिल हैं:
 - कैंसर के कई प्रकार

- पुराने ऑस्टियोआर्थराइटिस
- **मधुमेह: भारत में दुनिया में सबसे अधिक मधुमेह के मामले हैं, यहां 101 मिलियन लोग मधुमेह से पीड़ित हैं।**
- **कैंसर:** भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) – राष्ट्रीय कैंसर रजिस्ट्री कार्यक्रम परियोजनाएं:
 - **2022:** 14.6 लाख मामले
 - **2025:** 15.7 लाख मामले
- **हृदय रोग (CVD):** भारत में मृत्यु और दिव्यांगता के प्रमुख कारणों में से एक।
 - अन्य लोगों की तुलना में हृदय रोग से कम से कम 10 वर्ष पहले प्रभावित होते हैं।
- **गैर-संचारी रोग (NCD):** भारत में होने वाली सभी मौतों में से 60% अब एनसीडी के कारण होती हैं, जिसमें मोटापे से संबंधित बीमारियाँ शामिल हैं।
- **बचपन और किशोरावस्था में स्वास्थ्य जोखिम:** बचपन में मोटापे के कारण निम्नलिखित समस्याएं हो सकती हैं:
 - कम उम्र में एनसीडी का अधिक खतरा।
 - प्रतिकूल मनोसामाजिक प्रभाव:
 - स्कूल में निम्न प्रदर्शन
 - जीवन की निम्न गुणवत्ता
 - कलंक, भेदभाव और बदमाशी का अधिक जोखिम
 - मोटापे से ग्रस्त बच्चों के वयस्क होने पर भी मोटे बने रहने की संभावना अधिक होती है।

भारत में बढ़ते मोटापे के कारण -

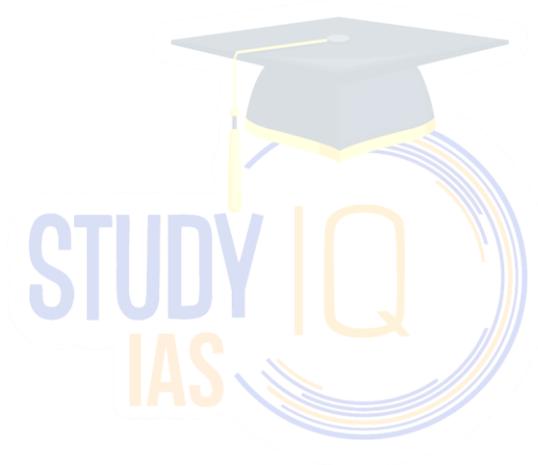
- **अस्वास्थ्यकर आहार और अति-प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ:** शहरी भारत में निम्नलिखित में वृद्धि देखी गई है:
 - अति-प्रसंस्कृत खाद्य उपभोग
 - अस्वास्थ्यकर खान-पान की आदतें (चीनी, नमक और अस्वास्थ्यकर वसा का अधिक सेवन)
- **कम शारीरिक गतिविधि स्तर: लैंसेट ग्लोबल हेल्थ स्टडी (2023) में पाया गया कि:**
 - लगभग 50% भारतीय पर्याप्त शारीरिक गतिविधि नहीं कर पाते हैं।
 - **इनडोर जीवनशैली:** डिजिटल उपकरणों का बढ़ता उपयोग और बैठे-बैठे काम करने की संस्कृति।
 - **बाहरी परिस्थितियाँ गतिविधि को हतोत्साहित करती हैं:**
 - कोई सुरक्षित साइकिल लेन या पैदल पथ नहीं।
 - सिकुड़ते हरित स्थान
 - बढ़ते सड़क अपराध शहरी क्षेत्रों में पैदल चलने वालों को रोकते हैं।
- **वायु प्रदूषण:** वायु प्रदूषण सूजन में योगदान देता है, जिसके परिणामस्वरूप:
 - कार्डियो-मेटाबोलिक रोगों का खतरा बढ़ जाता है।
 - आंत में वसा का संचय (अंगों के आसपास जमा वसा)।
- **स्वस्थ भोजन में आर्थिक बाधाएं:**
 - निम्न आय वाले परिवार कार्बोहाइड्रेट युक्त आहार (चावल और गेहूं) पर निर्भर रहते हैं।
 - प्रोटीन एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ (फल, सब्जियाँ, डेयरी, दालें, मांस) महंगे हैं।
 - ग्रामीण क्षेत्रों में मोटापा बढ़ रहा है और जल्द ही यह शहरी क्षेत्र से भी आगे निकल सकता है।

मोटापे को मापने की सीमाएँ -

- **पारंपरिक BMI सीमाएँ:** बॉडी मास इंडेक्स (BMI) सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला मीट्रिक है लेकिन इसकी सीमाएँ हैं:
 - मांसपेशी द्रव्यमान और वसा के बीच अंतर नहीं करता है
 - शरीर में वसा वितरण का संकेत नहीं देता है।
- **मोटापे के निदान के लिए अद्यतन दिशानिर्देश:**

- भारतीय विशेषज्ञों ने मोटापे का नया वर्गीकरण प्रस्तुत किया:
 - **चरण 1:** वसा संचय में वृद्धि लेकिन अंगों या दैनिक जीवन पर कोई प्रभाव नहीं।
 - **चरण 2:** वसा संचय अंग कार्य और शारीरिक क्षमताओं को प्रभावित करता है।
- अनुशंसित नई माप पद्धतियाँ:
 - कमर परिधि
 - कमर-से-ऊंचाई अनुपात
 - शारीरिक वसा प्रतिशत

स्रोत: [The Hindu: Why is India staring at an obesity challenge?](#)



ट्रम्प का अमेरिका फर्स्ट, भारतीय कृषि के लिए अवसर

संदर्भ

पारस्परिक टैरिफ से संबंधित राष्ट्रपति ट्रम्प की हालिया घोषणा भारत के लिए संरक्षणवाद से उत्पादकता-संचालित कृषि-निर्यात रणनीति की ओर संक्रमण का एक अवसर हो सकती है।

अमेरिका के साथ व्यापार में भारत के लिए चुनौतियाँ -

COMPARISON OF MFN TARIFF RATES: INDIA v/s USA



Source: WTO 2024

- **उच्च टैरिफ असमानताएं:** भारत सभी वस्तुओं पर औसतन 17% टैरिफ लगाता है, जबकि अमेरिका में यह 3.3% है।
 - अमेरिका (क्रमशः 5% और 4%) की तुलना में भारत में कृषि शुल्क विशेष रूप से अधिक है (39% साधारण औसत, 65% व्यापार-भारित)।
 - अमेरिका पारस्परिक टैरिफ लागू कर सकता है जिससे भारत के निर्यात, विशेष रूप से झींगा, बासमती चावल, प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ और शहद को नुकसान हो सकता है।
- **कृषि व्यापार असंतुलन:** भारत को अमेरिका के साथ कृषि व्यापार में 3.46 बिलियन डॉलर का व्यापार अधिशेष प्राप्त है।
 - भारत को अमेरिकी निर्यात में बादाम, कपास, इथेनॉल और सोयाबीन तेल शामिल हैं, लेकिन व्हिस्की, अखरोट, चिकन लेग और स्किमड मिल्क पाउडर पर उच्च टैरिफ (100-150%) विवाद के प्रमुख मुद्दे हैं।
- **आनुवंशिक रूप से संशोधित (जीएम) फसल प्रतिबंध:** पशु आहार और इथेनॉल की बढ़ती मांग के बावजूद भारत ने जीएम सोया और मक्का पर प्रतिबंध लगा दिया है।
 - जीएम फसलों में वैश्विक अग्रणी अमेरिका चाहता है कि भारत प्रतिबंधों में ढील दे।
- **गैर-टैरिफ बाधाएं:** कड़े गुणवत्ता मानक, लंबी स्वीकृति प्रक्रिया और नौकरशाही बाधाएं व्यापार को प्रभावित करती हैं।

- कुछ उत्पादों (मक्खन, गोजातीय मांस के टुकड़े, फल और सब्जियां) पर उच्च आयात शुल्क के कारण अमेरिका में भारतीय कृषि-निर्यात के लिए सीमित बाजार पहुंच।
- **कमजोर कृषि अवसंरचना:** भारत में कोल्ड स्टोरेज, कुशल लॉजिस्टिक्स और निर्यात-केंद्रित प्रसंस्करण इकाइयों का अभाव है।
 - गुणवत्ता प्रमाणन और ट्रेसेबिलिटी संबंधी मुद्दे वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में बाधा डालते हैं।

क्या किया जाने की जरूरत है?

- **रणनीतिक व्यापार वार्ता:** मिशन 500 के अंतर्गत वार्ता को आगे बढ़ाना (वर्ष 2030 तक 500 बिलियन अमेरिकी डॉलर के द्विपक्षीय व्यापार का लक्ष्य)।
 - उच्च मूल्य वाले कृषि-निर्यात (केला, भिंडी, आम का गूदा) के लिए कम शुल्क की मांग करना।
 - व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए अखरोट, क्रेनबेरी, पनीर, स्किमड मिल्क पाउडर पर चरणबद्ध टैरिफ कटौती की पेशकश करना।
- **कृषि-प्रतिस्पर्धा के लिए अनुसंधान एवं विकास निवेश:** कृषि-आरंभिक खर्च को कृषि-जीडीपी के <0.5% से बढ़ाकर कम से कम 1% करना।
 - उच्च उपज वाली फसलों, टिकाऊ कृषि पद्धतियों और निर्यात-संचालित किस्मों को प्रोत्साहित करना।
- **कृषि मूल्य श्रृंखलाओं का आधुनिकीकरण:** कोल्ड स्टोरेज, लॉजिस्टिक्स और आपूर्ति श्रृंखला बुनियादी ढांचे का विस्तार करना।
 - वैश्विक बाजार तक आसान पहुंच के लिए गुणवत्ता प्रमाणन और खाद्य सुरक्षा मानकों में सुधार करना।
 - प्रमुख उत्पादन क्लस्टरों में कृषि-निर्यात केन्द्र विकसित करना।
- **चयनात्मक व्यापार रियायतें:** अखरोट, ब्लूबेरी जैसे कम प्रभाव वाले आयातों पर शुल्क कम करना।
 - व्यापारिक हितों को संतुलित करने के लिए पोल्ट्री, डेयरी और इथेनॉल पर टैरिफ में क्रमिक कटौती।
- **संरक्षणवाद से उत्पादकता की ओर नीति परिवर्तन:** सब्सिडी-भारी कृषि (उर्वरक, मुफ्त बिजली) से हटकर दक्षता-संचालित विकास की ओर बढ़ना।
 - भारी टैरिफ बाधाओं के बजाय निर्यातोन्मुख नीतियों पर ध्यान केंद्रित करना।

स्रोत: [Indian Express: In America first, on opening](#)